अपहृत्य असंयम

उच्चार आदि का अविधि से परिष्ठापन।

अपहृत्यासंयमः अविधिनोच्चारादीनां परिष्ठापनतो यः सः।

(सम १७.१ वृ प ३२)

अपान

श्वास के पुद्गलों का उत्सर्जन करने वाली ऊर्जा, आन्तरिक क्रिया—श्वसनतन्त्र की क्रिया।

'आनन्ति वा प्राणन्ति वा' इत्यनेनाध्यात्मक्रिया परिगृह्यते।

(भग १.१४ वृ)

अवाय

अवाय की तीसरी अवस्था, जिसमें ईहा की सर्वथा निवृत्ति हो जाती है और ज्ञेय वस्तु अवधारणा के योग्य बन जाती है।

तस्सेव ईहाए अवगमणं काउं अवधारणावधारितव्वस्स अवधारयत्तो अवाओ त्ति भण्णइ। (नन्दी ४७ चू पृ ३६)

अपाय विचय

धर्म्यध्यान का दूसरा प्रकार। राग-द्वेष आदि से उत्पन्न दोषों अथवा शारीरिक-मानसिक दुःखों के उत्पत्तिहेतु, आस्रवहेतु आदि को ध्येय बनाकर उसमें होने वाली एकाग्रता।

अपाया—रागद्वेषादिजन्या अनर्थाः। (भग २५.६०२ वृ)

अपाया—विपदः शारीर-मानसानि दुःखानीति पर्यायास्तेषां विचयः—अन्वेषणम्। (ध्या ९.७४)

अपाय अनुप्रेक्षा

शुक्लध्यान की एक अनुप्रेक्षा। अपायों—आस्रवद्वारों, दोषों का चिन्तन करना

अपाया आश्रवापायमिति गम्यते, यथा·····

आसवदारावाए तह संसारासुहाणुभावं च।

भवसंताणमणंतं वत्थूणं विपरिणामं च॥

(स्था ४.७२ वृ प १९१)

अपुनर्बन्धक

वह व्यक्ति, जो तीव्र भाव से पापकर्म नहीं करता, जो भव परम्परा में लिप्त नहीं रहता।

पावं न तिव्वभावा कुणइ ण बहुमण्णई भवं घोरं।

उचियट्ठिइं च सेवइ सव्वत्थ वि अपुणबंधो त्ति॥

(योश १३)

अपूर्वकरण

१. सम्यक्त्व प्राप्ति के पूर्व होने वाला वह अध्यवसाय, जो पहले कभी प्राप्त नहीं हुआ अथवा अपूर्व स्थितिघात और रसघात करने वाला आत्मपरिणाम।

अप्राप्तपूर्वमपूर्वं स्थितिघातरसघाताद्यपूर्वार्थनिर्वर्तकं वाऽपूर्वम्।

(विभा १२०२ वृ पृ ४५८)

२. अष्टम गुणस्थान, श्रेणी-आरोहण के प्रारम्भ में होने वाला अपूर्व अध्यवसाय, जैसा पहले कभी नहीं आया।

प्रथमसमय एव स्थितिघातरसघातगुणश्रेणिसंक्रमा अन्यश्च स्थितिबन्ध इत्येते पञ्चाप्यधिकारा यौगपद्येन पूर्वमप्रवृत्ताः प्रवर्तन्त इत्यपूर्वकरणम्। (आवृ प २९८)

३. वह असदृश अध्यवसाय, जिसमें अनुप्रविष्ट जीव केवलज्ञान को प्राप्त करता है।

कम्मरयविकिरणकरं अपुव्वकरणं अणुपविट्ठस्स अणंते अणुत्तरे निव्वाघाए निरावरणे कसिणे पडिपुण्णे केवल-वरनाणदंसणे समुप्पज्जति। (भग ९. ४६)

अपृथक्त्व अनुयोग

अनुयोग की वह पद्धति, जिसमें प्रत्येक सूत्र पर नयदृष्टि से विचार किया जाता है।

चरणकरणानुयोग-धर्मकथानुयोग-गणितानुयोग-द्रव्यानु-योगानामपृथग्भावो ऽपृथक्त्वं प्रतिसूत्रमविभागेन वक्ष्यमाणेन विभागाभावेन प्रवर्तनं प्ररूपणमित्यर्थस्तस्मिन्नपृथक्त्वे नयानां विस्तरेणासीत् समवतारः। (विभा २२७९ वृ पृ २८)

अप्काय

(दहाजू प १३८)

(द्र अप्कायिक)

अप्कायिक

षड्जीवनिकाय का दूसरा प्रकार। वह जीव, जिसका शरीर पानी है।

आपो—द्रवाः प्रतीता एव ता एव कायः—शरीरं येषां तेऽप्कायाः। अप्काया एव अप्कायिकाः। (दहाजू प १३८)

अप्रतिज्ञ

१. वह व्यक्ति, जो इहलौकिक और पारलौकिक संबंधी कामभोगों में अनूर्च्छित और अगृद्ध होता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org